स्त्री विलाप

अर्थात्

गड़बड़ स्मृति बुढ़िया पुराण

से

बगैर मरजी जबरदस्ती का

विवाह ।

जिस को

इन की सताई हुई एक महा दुःखित विधवाने

रचा है ॥

आर्यदर्पण प्रेस शाहजहांपुर में छपा ॥

सम्बत् १९३८ ।

ओ३म्

भारतखण्डी स्त्रियों का विनय पत्र

———oo———

भुजंग प्रयात् छंद

निराकार निरलेप निरलेख स्वामी, पहुंचती रहै जिस को सबकी नमामी।
वह जगदीश है जगतका सृजन हारा, नमस्कार जिसको सरवदा हमारा॥
उसीने बनाये सूर्य चन्द्र तारा, करेगा इसी कष्ट से वह उबारा।
सुनो प्यारियो तुम जो चाहो भलाई, करो ध्यान जगदीशका चित्तलगाई॥
कहीं प्रेतोंकी कहां तलक प्रभुताई, कोई दुष्ट इनसा न दुनियां में पाई।
इसी प्रेतपीड़ा से व्याकुल है भारत, अविद्या में डूबा न सूझै यथारत॥
इसी प्रेत पीड़ाने कीन्हे दुखारी, भिखारी भिखारी भिखारी भिखारी।
सुरग में भी प्रेतोंने पीछा न छोड़ा, गये संग ना पुल वैतरणी का तोड़ा॥
कटाये हमारे सुरग में भी स्वामी, अपसरे मिलाईं किया अति ही कामी।
जन्मांतर पती जन्म काटैं विचारी, उसे यह बतावैं बड़ी व्यभचारी॥
पतिक संग जीवत ही नज पुत्री जारी, कहो सज्जनो कैसा अन्याय भारी।
इस वेद में दूजा भरता न पाया, पुनर भू शब्द फिर कहो कहां से आया॥
विचारे इसे जो तनक न्याय करता, मजीवत ही स्त्री के फिर व्याह भरता।
कही स्त्रीलीला महा पाप मानो, सभी स्त्री कोन्हो अवगुणन खानी॥
कहा जन्म ही से यह है बुद्धि हीनी, इन्हे जान दासी विधाता न दीनी।
लिखा भागवत वेद दरशन पुराणा, नहीं योग स्त्री को विद्या पढ़ाना॥
ग्रन्थ ये रचों जिस में निन्दा हमारी, गरज सब तरह से करो इनको ख्वारी।
मिलै धन न पति धन न पितृ धन में किञ्चित, करो सब तरफ से विरथा हाय वंचत॥
पढ़ा कोक विद्या अविद्या प्रकाशी, गये भूल इस में सकल भारत वाशी।
कोई वेश्या गमन को धर्म जाने, कोई बहनो संग जीवन प्रमाने॥
कोई नीच लौंडे पै निज प्राण वारे, महा पाप वाणी को मुख से उचारे।
कोई त्याग स्त्री हुआ इनका चेला, मुड़ा सिर बेशरमी के मैदान खेला॥
न दो कान तुम इनकी बातों पै प्यारी, ये हैं खुदगरज और बड़े रियायकारी।

जब यह हाल पुरषों का स्त्री निहारी, गई भूल सब गुण हुई पाप चारी ॥
कोई गाये विष्टा को निज इष्ट जाने, करे बहुत पुजा गोबरधन बखाने।
कोई चित्त देकर करे सरप पूजा, कहै सर्प बिन जगत में कौन दूजा ॥
कोई चील उल्लू को जाने विधाता, कोई गीध गज को कहै जगत त्राता।
कोई बूढ़े बाबू कोई शेख सधो, कोई सीतला का कोई रोवै सदो ॥
लिखे चित्र कछ देव अक्षत चढ़ावै, महा भ्रम के करम को धर्म्म गावै।
कोई जाय बाबा पै हाहा पुकारे, महाराज स्वामी नमो तन निहारे ॥
कोई निशि के मध्यान जावै कबर पै, चढ़ा फूल दीप वासना पुत्र करके।
गरज सब तरह से भुला इष्ट अपना, पड़ी शोक निद्रा गई भूल सपना ॥
भ्रमत सिंध अविद्या भारत जान प्यारा. कृपा सिन्धु कृपा करी अति अपारा।
मनों भानु चारों दिशा ते प्रकाशे. गई शोक रात्री निकट प्रात भासे ॥
करी अलख की धारना अलख धारी, कहा प्रेत जोनि यह नास्तिक है भारी।
मेरे मन में जब अलखधारी समाया, गई सिरसे मेरे उतर प्रेत छाया ॥
मनो मन में अब ज्ञान का भानु प्रघटा, गई प्रेत महिमा महा तिमिर निघटा।
जो ऐसे समय में न सुध हो हमारी, कहें क्यों न फिर स्त्री करमों की मारी ॥
दिया दान आधे को आधा भिखारी, कहो कौनसी वेद की श्रुति विचारी।
अब उम्मेद है आरियो तुम से भारी, ना दो पीठ अबला को है माझधारी ॥
यही दान कर जोर हम याचें सारी. करो दान विद्या का मांगें भिखारी।

भजन

हो प्रभु अब करो पार ॥ निरदया हिंद सिंध में बेड़ा डगमग होत हमार। भारत अविद ग्राह सम ग्रस्यो, कौन छुटावन हार। काम लहर अति हो नि-यरानो, छिन छिन होत अपार। क्रोध पवन पल इस्थिर नाहीं, लोभ घुमड़ जल धार। मोह मगर मर्याद काड़ के, कष्ट देत नर नार। इत पग ग्रह उत सिंध पुकारत, नाव न खेवन हार। माझ धार कहो काहि पुकारें, भई अनाथ एकबार। तुम बिन कौन सहायक स्वामी, जासों करें पुकार। काग जहाजै ठौर न दूजी, देखो आंख पसार। गज गण का सुमरत तत्काल है, कष्ट देय निरवार। सो जिय जानि शरण तव लीन्हो, करुणा कर करतार ॥ १ ॥

भजन

बेहल घटा खोल लटा भारत पै छाई ॥ क्रोध गरज अति अपार, श्रवण सुनत होति रार, इत उत ते कर हुंकार रिपु दल छविछाई । काम पवन वेह झकोर, मनु आथाह प्रलय घोर, मोह मोर कुहकि कुहकि जहां तहां रहै छाई । दामिन प्रिय अहं जान, चमक देख चलत प्राण, आत्विक अघ घोर पाप करत ना अघाई । लोभ बूंद परत धार, जहां तहां अघ बेहत नार, विनशय भ्रम सिंध जान छिंद में समाई । सिरपै यह घटा कारी, सूझत न अटा अटारी, निरदई भारतै त्याग कहां जाओ माई । सघन वन निशाकारी, दुष्टन डर अति है भारी, भीजत अबला अनाथ कोई ना सहाई । पति सुत पितु दई त्याग, जिय तनक ना धरत लाज, सृष्टि देख अकाज शरण तेरी आई ॥ २ ॥

भजन

अहो हरि शरण चरण की देहु ॥ शुभ विद्या प्रकाश भारत में शोक तिमिर हरिलेहु । भ्रमत सिंध अथाह ना पावति, निज करमों गहि लेहु । अंधकार निश सूझत नाहीं, तापर भूलो गेहु । विषै भोग मन तिरपति ना, यावत शांति सुधारस देहु । जगपति जय वंदन जगनायक अब चरणन में लेहु ॥ ३ ॥

भजन

मन काहे होत निरासा हृदय प्रभु की रख आसा ॥ जिनने यह जगजीवन दीन्हा, तिन सोशोकसकल हरलीन्हा, मन में रख जासु यकीना, कटै काल व्याल यम त्रासा । मत भूल उसे अभिमानी, जोसदा देत अन पानी, हम कोट भांति करजानी, नहिं वासम दूसर दाता । जिन गर्भ अस्थी रचा कीन्ही, सो सब जानत तब दीनी, मतभूल उसे मति हीनी, स्थिन पय कियो प्रकाशा । मैं बुद्धि हीन अति नारी, सब भांति है भई अनारी, सब करत हमारी ख्वारी, अब तुम मन सब की आसा । यह कष्ट सहत बहु भारी, प्रिय बांधव सकल बिसारी, अब कासों करें पुकारी, शशि सूझत नाहै प्रकासा । भई अबला अति हि अनाथन, दुख कासों करें अवगाथन, नहिं साथ साथी साथन, कोई देत ना तनक दिलासा । प्रिय रिपु सम साज सजाये, मम अम गुण सकल नसाये, जहां तहां अवगुण कहे धाये, नाना प्रकार कर हांसा । नहिं जानत तोहि गुसाईं, मम असी काल डर पाहीं, रोरो कह कह पछताहीं, हम व्यर्थ काल कियो

नासा। जिमि भारत रच्छा कीना, अति निबल जान बल हीना, संसार सकल आधीना, सत्व हिरदय सदा जिह वासा। मन हर छन भजहु निरंजन, त्रै ताप सकल भय भंजन, ता चरणन कर दृग अंजन, भयो उदय भानु तम नासा॥ ४

गज़ल

या खुदाया कर खताएँ माफ़ सारी इन दिनों।
कर फज़ल से अपने सब पर फज़ल जारी इन दिनों॥
चल रही है हिन्द में बादे बहारी इन दिनों।
हम पै वोही कहर जो था पहिले भारी इन दिनों॥
हो गईं एक दम से सब बेवा बिचारी इन दिनों।
पर न कोई नज़र आया ग़मगुसारी इन दिनों॥
जुल्म का खंजर लगा है दिलपै कारी इन दिनों।
अश्कूम की सूरत है खूं आंखों से जारी इन दिनों॥
जहल के आज़ारने लागिर किया है इस क़दर।
शकल पहिचानी नहीं जाती हमारी इन दिनों॥
जिस्म इंसां से बदल कर हो गई खालत सितां।
क्या ही सूरत होगई है कारी कारी इन दिनों॥
बाप शौहर बेटा भाई गरज़ सब इस कैद में।
हमपै लाते हैं मुसीबत बारी बारी इन दिनों॥
शक के हाथों से बहुत तंग होके घर से निकलकर।
फिरती है हर एक औरत मारी मारी इन दिनों॥
मर्दों के फ़ैलों से हर दम तो जलाना फ़र्ज़ है।
करती है हर एक जुलमपै जां निसारी इन दिनों॥
बे इलम बेपर चिरा के बेज़बां सब होगईं।
दिल में सब के छा रही तारी की भारी इन दिनों॥
कर मिहर इस बेज़बांपै वरना होती है तमाम।
हाथ से रखली है सीने पर कटारी इन दिनों॥

गज़ल

अबरे तर आंसू बहाना कोई हम से सीख आय।

करें तजवीज क्या हम कैद से अपनी रिहाई की।
गले तक हाथ से खंजर ही तो लाया नहीं जाता॥
बहुत हमने सहारे जुलमोगम इस बहैर दुनियां में।
अरे मजलुम फिरके तुझ तलक आया नहीं जाता॥
वफा हमने करी तूने जफा में सब किया शामिल।
कहे क्या ... क्या जुलम दफतर तो पढ़वाया नहीं जाता॥
वह है वहर फ... सफा दुनियां जरा टुक गौर कर गाफिल।
मसीहा है दहै। ... इश्रत का उसपे क्यों आया नहीं जाता॥

गजल

कहो जाके कोई यह ... आज मेरी हिन्द निस्वां से।
नहीं है वक्त अब ता... मुल उठा एक बार जिंदां से॥
किसे क्या गरज जो तुम को ... है इस गफलत से आगाही।
जरा टुक सोचलो दिल मैं ... है क्या उम्मेद हिन्दां से॥
शराबे जेहल को पीकर हुए ... दम से सब गाफिल।
नहीं हालत है अबतर कुछ तुम्हें ... गारी कम परिंदां से॥
नहीं कुछ शब है अब बाकी उठा ... लतर को धर ताकी।
हटा दे जेहल का परदा अरज ... ख्वाबमंदां से॥
नहीं अच्छा है अब सोना फिर हो बेफा... सदा रोना।
करो तुम फिकर पहिले वह हुआ जो ...
खड़ी है मुसाफिर तेरो जरा करवट ... दानियमंदां से॥
न अब ऐसा सख्त दिल हो नजर ... ले हिन्द।
... रती खंदां से॥

भारत खण्डी स्त्रियों की प्रार्थना

अब हम दास तुम्हारी प्रभु जी, अब हम दास तुम्हारी हैं ॥
तीर्थ ब्रत मूर्तिनको पूजा, बहुत भांति करहारी हैं।
काहू न टेर सुनी निबलन की, तुम सन आये पुकारी हैं।
माता पति सुत बांधव सब सों, बहुत भांतिक पच हारी हैं।
कोउ ना दृष्टि परी मम पालक, बारम्बार निहारी हैं।
जिन सब मान करत तेहि दी, औमुह करत ख्वारी हैं।
जिन के नाम रत्न सम प्रगटे, अब पत्थर सों भारी हैं।
जिन के हेत नरपति दुख पावत, फिरत सो दर दर मारी हैं।
जिन सुख हेत धरम वह भाषत. अब मानो अतिथि भिखारी हैं।
हिंदिन क्रोध गरज घन बरखत, मम तन लगत अंगारी हैं।
काम दहत तन दूषन लावत, यम पुर जाय पुकारी हैं।
लोभ ग्रसे निज पुत्रिन त्यागत, पशु सम करत नियारी हैं।
विपत घोर जलथाह न पावत, नौका शरण निहारी हैं।
महा दुखित भारत की अबला, कहां किहि हेत बिसारी हैं।
इष्ट मिष्ट में कोउ ना दीखत, अब हम दास तुम्हारी हैं ॥

राखो शरण आये की लाज ॥

कहैं हिन्दनी सुनो करुणा मय, कठन भये मम काज।
बिन गुण बिन श्रम बिन विद्या बल, अविगुण भरे जहाज।
हैं अबला नाथ अति निरधन. त्यागी हिंद समाज।
निरदया हिंद सिंध में हमरो, डग मग होत जहाज।
राखत बंदीग्रह जिमि दुष्टन, कष्ट देत बेकाज।
माता पिता पती सुत बांधव, पुनि पुनि करत अकाज।
बिन दूषन दूषन दे त्यागत, करति हैं आत्म घात।
दुख दीने हर सब सुख लीन्हे, इन्हें भा आवत लाज।
सबहिन छाड़त शरण तव लीनी, राख स्त्रीजन की लाज।
प्रभु अपराध क्षमा कर सबरे, करुणा कर महा राज।

स्त्री विलाप

अर्थात

गड़बड़ स्मृति बुढ़िया पुराण से वगैर मरज़ी जबर दस्ती का विवाह

हिन्दुओं के धर्म शास्त्र मनुस्मृति में आठ प्रकार का विवाह लिखा है; पहिला "ब्रह्मविवाह" अर्थात जिस में वर कन्या विद्या आदि की आपस में परीक्षा करें और माता पिता भी खुशी से दान देवें। दूसरा "दैव विवाह" यग में दक्षना की जगह दामाद को कन्या देनी यह दैव विवाह है। तीसरा "आर्ष" एक गाय बैल वर से लेकर कन्या देना यह आर्ष विवाह है। चौथा "प्रजापति" वर कन्या आपस में प्रतिज्ञा करलें कि एक दूसरे के विरुद्ध कोई काम न करेंगे इस का नाम प्रजापति विवाह है। पांचवां "आसुर" वर के कुटम्बियों को धन देकर वर कन्या को भी धन देवें यह आसुर विवाह है। छटा "गांधर्व" वर कन्या बिना किसी की संमति लिये खुशी से आपस में विवाह करलें यह गांधर्व विवाह है। सातवां "राक्षस" कन्या का पिता न देता हो जबरदस्ती छीन लाना इसका नाम राक्षस विवाह है। आठवां "पिसाच" कन्या मदादि पान किये एकांत में सोती हो जबर दस्ती उस का धर्म नष्ट करना यह पिसाच विवाह है।

हर ज़माने में जैसे जैसे विद्वान पण्डित पैदा हुए उन्होंने अपनी अकल के अनुसार और समय के मुताबिक़ दस्तूर बनाये उस वक़्त लोगोंने उन्ही धर्मों को मान कर और उन्ही के अनुसार चलकर सृष्टि में अत्यंत सुख पाया।

इसी तरह आजकल के अकिलमंदों ने एक गड़बड़ स्मृति बनाई हैं इस समय के बड़े २ विद्वान पंडित वेद और शास्त्र का अर्थ अच्छी तरह जानने वाले अविद्या के आधीन हो जो जो गड़बड़ महाराज बताते हैं मानते हैं।

और और भी भारत खण्डी सब इन्हीं के अनुसार चलते हैं, मैंने खूब सोचा कि जो आदमी एक काम में आप दुख उठा रहा हो और हजारहा को उस काम में दुख उठाते देखता हो और खूब दिल में जानता हो कि यह काम मेरे नुकसान का बायस होगा और फिर वह अपने और अपने बांधवों के वास्ते वही काम करे तो उस से अधिक मूर्ख कोई नहीं होसकता।

सोचने से मालूम हुआ कि इस ख़राबी की जड़ मूर्ख स्त्रियां ही हैं, घर का बन्दोबस्त सब इनके अख्त्यार में हैं जो जो इन्हें महारानी अविद्या कराती है यह गुड़ियों के मानिंद नाचती हैं, पंडित जीने तो गड़बड़ स्मृति बनाई है इन्होंने एकबुढ़िया पुराण रचा है, जो इस पुराण के दस्तूरों को नहीं मानता तो उसे फ़ौरन किरश्चन होने का इल्ज़ाम लगाती हैं, धर्म शास्त्र अनुसार तो स्त्रियों को पढ़ना योग्यही नहीं, चाहे ब्राह्मणी ही क्यों न हो. और दुनिया के कारबार कभी बंद नहीं होसकते चाहे विद्वान हो चाहे मूर्ख हो सबही अपनी बुद्धि अनुसार काम करते हैं, पस मूर्ख स्त्रियां अपने रचे हुए पुराण को मानती हैं, अगर कोई विद्वान पंडित इन्हें समझावे तो जवाब देती हैं कि हम तुम्हारे धर्मशास्त्र को नहीं मानेंगी जो हमारे पुरखों की चाल है वही करेंगी. अगर बहुत कहो तो भ्रम को सरन अविद्या के प्रभाव से साफ़ कहती हैं कि हमें किरानी नहीं होना जो किरानियों की रस्में करें; पस कहने वाला लज्जित हो चुप रहजाता है. जो इन के मन आती है करती हैं, हमें तो इन के स्वामियों पर बड़ा शोक आता है कि जिन्होंने समस्त भारतखण्ड में विद्या से अपना नाम प्रसिद्ध किया है, अपना नाम विद्यासागर रक्खा है, शास्त्र परीक्षा में उत्तम पदवी पाई है, किन्तु बहुत से पंडित भी जो रात दिन धरम शास्त्र की पोथियां बग़ल में दबाये फिरते हैं और एक एक श्लोक कण्ठाग्र किया हुआ है, वे सब विद्याओं और धर्मशास्त्र को ताक में रख जो मूर्ख स्त्रियां कहती हैं उसे पत्थर की लकीर के समान मानते हैं।

हमारी आशा का जहाज़ जो केवल इन्हीं विद्वानों के भरोसे पर खड़ा है जब लोग अविद्या के आधीन होजाते हैं और किञ्चित हमारा ख़याल नहीं करते तब इन्हीं अविद्यासागर के अविद्या में डूब जाता है; कहो पाठक गण अब हम अनाथ अविद्या रूपी जेलख़ाने के अंधकार में पड़ी हुई किस से सहाय मांगें ;

अब बग़ैर मरज़ी जबर दस्ती के विवाह पर जो मूर्ख स्त्रियों का रचा हुआ है और जिसे संपूर्ण भारतखण्डी आंख मीचे किये जाते हैं जहां तक मुझे मालूम है लिखती हूं, हिन्दुओं में चार वर्ण हैं ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, और शूद्र; इन चारों की कई जाति हैं उन जातों के पृथक् २ दस्तूर हैं; उन सब द

स्तूरों की अलहदा २ रस्में हैं; परन्तु सब गड़बड़ स्मृति और बुढ़िया पुराण के अनुसार हैं, कोई आदमी सब रस्मों को नहीं जानसकता जो संक्षेप से भी लिखी जायँ तो भी एक बड़ी पोथी बन सकती है, इस लिये जो सब स्त्री पुरुष अपनी कौम के दस्तूरों को लिखें तो सुभीता से सब हिन्दुस्तान की रस्में लिखी जासकती हैं।

पस मैं अपनी जाति की रसमैं कि जिस में मैं हूं यहां लिखती हूं।

पहिले प्रोहित जी का हाल लिखा जाता है, हरएक कौम हरएक फिरके के हर जात के साथ प्रोहित जी रहते हैं, जैसे हर रिसाले, फौज पलटन के साथ अलहदा कपतान जनरैल, कमिश्नर रहता है; जैसे तमाम फौज इन के अखत्यार में रहती है जिधर चाहते हैं भेजते हैं वैसे ही तमाम हिन्दुस्तान प्रेतों के अखत्यार में है जो चाहते हैं इन से कराते हैं और तो तौर खाना भी बिना अपने हुकम के नहीं खाने देते।

ये वही प्रेत हैं जिनको पीड़ा देने से आज तमाम हिन्दुस्तान पीड़ित हो अतेव दुखको प्राप्त हो रहा है, हर कौम हर जात हर खानदान हर घर में यह प्रेत पीड़ा है और इन प्रेतों के साथ एक भूत भी हर समय हिन्दुओं का खून पीने को रहता है जैसे चोरों के साथ गांठकाटनेवाले रहते हैं, जैसे यह कहावत भी है कि जहां गंगा तहां झाऊ जहां प्रोहित तहां नाऊ; प्रोहित जी कहते हैं कि यजमान के दसवें अंश के हर काम में हम मालिक हैं, जैसे दामन चोली बिना नहीं पहचाना जाता वैसे ही यजमान प्रोहित बिना नहीं रह सकता।

विवाह में बर कन्या के माता पिता न कुछ देखते हैं न किसी काम में बोलते हैं जो कुछ प्रोहित और ठाकुर साहब कर आते हैं वही होता है, ये लोभ की मूर्ति दस रूपये के लालच में आकर दस बर्ष की कन्या का साठ वर्ष के बर से विवाह करा देते हैं, कभी बीस वर्ष की कन्या को सात वर्ष के बर से विवाह देते हैं, कभी कभी कन्या के माता पिता को भी लालच दिखा इस महा पाप में पतित करते हैं।

यह बात तमाम हिन्दुओं में है किन्तु आजकल जारी है कि जितना रुपया विवाह में खर्च होता है उस का आधा नाई प्रोहित को देना पड़ता है, जो

कि लगायत की लोकके नाम से प्रसिद्ध है, बहुत लोग इसी लोक के पीछे कन्याओं का विवाह भी नहीं करते, न लोक के योग्य रुपया होता है न विवाही जाती हैं, और जो जो खराबी बड़ी उमर में विवाह न करने से होती हैं किसी से छिपी नहीं हैं; इसी लोकने हिन्दुस्तान के बड़े बड़े खानदानों को खाक में मिला दिया है, इसी लोकने बड़े बड़े इज्जत दारों को बेइज्जती कर अंत को जेलखाने में भेजदिया है, इसी लोक के पीछे जो आज इज्जतदार शरीफ नज़र आते हैं सब जादाद इस के नज़र कर अखीर में टुकड़े मांगकर मरते हैं, इसी लोक के पीछे चोरी कर बग़ैर मौत दुनियां से चल देते हैं, तमाम हिन्दू इसी लोक के फ़कीर हैं, जो इस लोक से ज़रा सरका वहीं कि प्रोहित जीने किरानी मशहूर करदिया।

लोक का तात्पर्य यह है कि जो जो उन के मन में आया विवाह की हर रसम में अपना टेक्स ठहरा लिया, जिसने इस टेक्स में ज़रा कमी की उसी के दरवाज़े पर छुरी मारने को त्यार हो गये, पस लाचार हो बिचारे करज़कर भूखों मर इन का टेकस पूरा करते हैं।

पहिले सगाई होती है जिसे मंगनी कुड़माई कहते हैं जो कन्या का पिता बर के वास्ते पांच रुपया भेजता है तो दाई प्रोहित जी और सवा ठाकुर साहब ले लेते हैं बाकी कुल सवा बर को मिलता है, फिर इन के खिलाने में बड़ा खर्च करते हैं, कपड़ा दिया जाता है, जो खाना अच्छा न मिले तो तुरन्त सगाई तुड़वा देते हैं।

जब विवाह सुझाया जाता है याने प्रोहित जी का हुकम लिया जाता है कि किस दिन किस लगन में विवाह हो तब भी जन्मपत्र के साथ कुछ रुपया इन के आगे धरते हैं।

यहां सिवाय कहने "महाराज दान करो" प्रोहित जी को कुछ भी नहीं आता, मूर्खों के आगे तो गुनमुन कर कर बता देते हैं और जो थोड़ी बहुत संस्कृत जानते हैं उन के वास्ते अपने आगे एक पंडित नौकर रख छोड़ते हैं, कभी अपने लेने के मारे विवाह में ग्रहों की पीछे लगा देते हैं, कहदेते हैं कि इस विवाह में चन्द्रमा की पूजा करो राहु की पूजा करो सूर्य की पूजा करो गौ का दान करो तब ग्रह का फल दूर होगा वरना बरको बहुत कष्ट प्राप्त होगा

और ऐसा विवाह कोई नहीं जिस में पूजा न लगती हो और कभी कभी ग्रह इन के सिर को भी आन निपटते हैं तब यह अक़िल के दुश्मन अपनी आमद-नी का दरवाज़ा बंदकर मशहूर करते हैं कि चार वर्ष कोई विवाह न करे बृहस्पति महाराज सिंगल द्वीप में तशरीफ़ लेगये हैं, जब वे वापिस आवेंगे तब शादी करना, जब दो वर्ष गुज़रते हैं और पास खाने को नहीं रहता म-ज़दूरी करनी आती नहीं तब कह देते हैं, कि बृहस्पति कन्याओं की पुकार सुन लौट आये अब खुशी से शादी करो।

विद्या का लेश मात्र भी पंडित जी में नहीं होता पस "गणानांत्वा गणपति" कहकर बतादेते हैं, मूर्ख स्त्रियों में तो प्रोहित जी ही काम चलाते हैं, मैं भी एक दफ़ा किसी शादी में गई वहां प्रोहित जी को हर काम में विवाह में संकल्प में कुल देव के आगे हर वक़्त यही श्लोक पढ़ते सुना "ओं नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राम्हण हितायच। जगद्धिताय कृष्णाय गोविंदाय नमो नमः॥"

अब प्रोहित जी कहते हैं कि फ़्लाने महीने में फ़लाने दिन फ़लानी लग्न में विवाह हो, इस से महीना पहिले लग्न भेजी जाय, पंद्रवें दिन पहिले हल्द बान दरेता हो, नौ दिन दोनों वक़्त तैल चढ़ाया जावे, एक दिन पहिले मढा हो, दूसरे दिन विवाह, तीसरे दिन बड़ार हो, चौथे दिन विदा होजावे; जो इन लग्नों में मेरे कहने अनुसार विवाह न हुआ तो कन्या जाते ही रांड होजायगी।

अब हम प्रोहित जी से पूछती हैं कि अपनी लड़कियों का तो बराबर इ-न्हीं लग्नों में विवाह करतेहो फिर वे क्यों रांड होजाती हैं? क्यों नहीं उस शु-भ लग्न की तलाश करते जिस में भारतखण्ड की स्त्रियां वैधव्य से बचें।

बुढ़िया पुराण में विवाह के किसी काम में कन्या को बोलने का अधिकार नहीं क्योंकि गड़बड़ स्मृति में पंडित जीने कलियुग के लक्षणों में कहा है कि जब कन्या अपने मुख से बरकी बात चीत करेंगी विवाह की सामग्री को खुद देखेंगी वहां बैठेंगी तब घोर कलियुग जानना।

उस सत्ययुग का ही स्वरूप बनने को कलियुग का अपने ऊपर बहाना न लेने को विवाह की किसी बात में कन्या नहीं बोलती, जो प्रोहित, माता, पि-ता कहते हैं सब मंज़ूर करलेती है, जहां चाहे भेजदें जिस के हाथ चाहे पशु

के समान वेचलैं, यह मानिन्द बेजान के उफ भी नहीं करती; जो कुछ गुज़रती है अपने दिल पर सहारती हैं ज़बान से एक हरफ़ बाहर नहीं निकालतीं।

अब हम पंडित जी से वा कलियुग के अवतारों से पूछती हैं कि रुक्मणी जी माता पिता से जिद् करके कृष्ण के संग चोरी चोरी चली गई तो क्या वहां कलियुग ही था? फिर पार्वतीने जिसके कि बाप से और महादेव से दुश्मनी थी घर से निकल कर खुद बाप से कहा कि मैं महादेव के सिवा किसी से शादी न करूंगी, फिर क्या उस वक्त घोर कलियुग था? फिर सीता, सकुंतला शशिकला, सत्यवती जिन्होंने कि खुद तलाश कर अपना २ विवाह किया था क्या उस वक्त भी घोर कलियुग था?

और बहुत कन्याओंने सत्ययुग में अपनी पसंदपर गांधर्व विवाह किये हैं किन्तु रीति यही थी क्योंकि यह गांधर्व प्रजापति स्वयंबर विवाह उसी समय बने थे, यहां महाराज कलियुग स्वरूपों का ही छल है क्योंकि जो कन्या बोले तो इन के हाथ फिर तीन ही काने रहजायं और जो जो कन्याओं के न बोलने से उन का नुकसान और दुख होता है और होरहा है किसी हिन्दू से छिपा नहीं, किन्तु कन्या के वास्ते बड़ा भारी कष्ट का पहाड़ खड़ा होजाता है जिस को कि सारी उमर में ब्रह्मा भी नहीं हिला सकता, दिन दिन द्विगुण बढ़ता जाता है।

पाठक गण! यहां मैं कुछ अपने विवाह का हाल लिखती हूं—

मेरी सगाई प्रोहित नाई ने रुपये के लालच से एक ऐसे घर में की कि जहां न तो वर ही अच्छा था और न घर में ही कुछ था कराटी, उस वक्त मेरी उमर चौदह साल की थी वर और विवाह का अर्थ अच्छी तरह समझती थी जब कोई कहदेता कि अच्छा वर है तब जी में खुश होजाती, जब कोई कहताकि वर अच्छा नहीं तब जी में कुढ़कर चुप रहती, जब विवाह का समय आया और बरात निकट पहुंची तो देखने वालों की ज़बानी सुना कि वर बिलकुल कन्या के लायक़ नहीं है, पस उस वक्त मेरे दिल में वर के देखने की जैसी बेक़रारी हुई मेरा ही जी जानता है, मगर कलियुग के भाइयों की जानों को रोकर सिवा रोने के कोई चारा न देखा, हमारी क़ौम में एक दस्तूर है कि जब बरात दरवाज़े पर आती है तो एक नायन कन्या को गोद में

लेकर मुख में चावल भरवाके सात दफा बर के ऊपर फेंक वाती है, ज्यों हीं नायनने चांवल थूकने को मेरा मुख खोला मैंने वक्त को ग़नीमत जान कर अच्छी तरह बर को देखा।

मगर उस वक्त मुझे इतनी पहचान की अक़िल न थी, पर खूब सूरती बद सूरती को खूब पहचानती थी, देखते ही गम के दरिया में डूबगई मगर सिवाय सबर के कोई किनारा न पाया, लोग खुशियां मनाते थे मेरे दिल की हालत कोई नहीं जानता था, खान पान वस्त्र भूषण कुछ अच्छा नहीं लगता था, माता पिता बांधव लोग जानते थे कि हमारी जुदाई से इसकी यह दशा होरही है।

फिर जब कन्या दान के समय मेरे पिताने मेरा हाथ पकड़ बरके हाथ में दिया तो मैंने बहुत चाहा कि मैं अपना हाथ न पकड़वाऊं मगर लाचार हो रोने लगी और कुछ न कह सकी, फिर जब फेरे फिराने को लेचले तब भी उच्चस्वर से रोती कि जैसे किसी बेगुनाह को फांसी पर चढ़ाने लेजाते हैं।

पस मेरा हाल परमेश्वर ही जानता था न किसी से कहसकती थी न कोई उस वक्त समझाने वाला था, फिर विदा के दिन अलग एक कोने में खिड़की से बर को देखने लगी और दिल में कहती थी कि हाय! मेरे पिता की बुद्धि बिलकुल नष्ट होगई, हाय! इस समय कोई मेरे पिता को नहीं समझाता. हाय! परमेश्वर मैं कैसे इस के साथ तमाम उमर काटूंगी जिस को कि अभी मेरे नेत्र कबूल नहीं करते. अगर तूने मेरे वास्ते दुनियां में ऐसा ही बर पैदा किया था तो मेरी उमर भी बहुत न करना ताकि मैं शीघ्र ही दुखों से छूट जाऊं, हा! नाई प्रोहितो परमेश्वर तुम से मेरा बदला लेवे; मेरे पिताने बहुत दान दहेज दिया, कीमती जवाहरात के निहायत खूबसूरत भूषण, बहुत अच्छे वस्त्र, रुपया, अशरफी, सवारी, मकान, बाग, जमीन आदि सब चीजें गृहस्थी की दीं किन्तु इस समय से स्वामी को बड़ा अमीर बनादिया, मगर इन सब चीजों से मुझे किञ्चित भी खुशी न हुई किन्तु उलटी यह सब चीज मेरे दुख का कारण हुईं, जो मेरा पिता मेरी संमति लेकर विवाह करता तो मुझे इन चीजों के न देने से भी बड़ा आनंद होता क्योंकि चाहे कोई तमाम दुनियां का बादशाह होजाय पर दिल में रंज रहे तो वह नरक के समान दुखी रहता

है और किसी के दिल को रंज फ़िक्र न हो तो नरक भी स्वर्ग के समान सुख-दाई भासता है।

आखिर नाई प्रोहित को जान को रो रो कर समय काटती रही, जो २ पेश आई सहारती रही; कुछ दिन बाद दैव योग से मुझ में स्वामी से प्रीति होगई तब मैंने यह तमाम हाल अपने स्वामी के आगे कहा मेरे स्वामीने इस रस्म के निकालने वालों और करने वालों और कलियुग का बहाना कर कन्याओं के अधिकार छीनने वालों की अकिल पर बड़ा ही अफ़सोस किया और कसम खाई कि यदि हमारे कन्या होगी तो वग़ैर उस की संमति के लिये हम उसका हरगिज़ २ विवाह न करेंगे।

अब जबर दस्ती विवाह के दस्तूर लिखे जाते हैं

एक महीना पहिले लग्न भेजी जाती है इस में कन्या का पिता यथाशक्ति रुपया नारियल और एक विवाह का पत्र जिस में प्रेत जी के हुक्म लिखे होते हैं कि फ़लाने दिन विवाह बरात मढ़ा होगा प्रोहित के हाथ भेजता है यहां भी प्रेत जी आधा लेलेते हैं।

इस के पन्द्रह दिन बाद "हल्द" जिसे "धान दरता" कहते है होता है, पहिले प्रोहितजी चौक पूर कन्या से माता पिता बांधव आदि सब से पूजा कराते हैं, इस में बांधवों को प्रोहित जी को कुछ देना होता है, बाद इस के सात स्त्रियें जिनका स्वामी जीता है कन्या और कन्या की माता के भूषण वस्त्र उतारती हैं और दोनों को मैले वस्त्र पहिना देती हैं सिर के बाल खोल देती हैं फिर कन्या को गोद में लेकर माता बैठती है वही सातों स्त्रियें पहिले हलदी कूटती हैं फिर नमक, जौ, उरद, कणक, मूंग आदि सात अनाज सात दफ़ा पीसती हैं और कन्या की गोद में डालती जाती हैं, फिर सातों पिट्ठी पीसती बड़ी तोड़ती पापड़ बेलती हैं मगर सात दफ़ा से ज्यादह हाथ नहीं लगातीं, फिर इन को सात ही कोरे बरतनों में भरकर रख देती हैं, इस दिन से कन्या कनरा की माता बाहर नहीं निकलती मगर कनरा तो बिलकुल ही किसी स्त्री के सामने भी नहीं निकलती अलग कोने में बैठ रहती है, आज से कनरा को हल्दी चढ़ी बोलते हैं मांयां पड़ी कहते हैं फिर इस के तीसरे दिन तेल चढ़-

ता है, पहिले प्रोहित पूजा कराते हैं कनया के हाथ पावों में कङ्गण कङ्गण रंगीन सूत का धागा जिस में एक लोहे का छल्ला एक सुपारी पीली सरसों की पोटली और एक लोहे की चूड़ी कड़ा बांह में और पांव में पिन्हा देते हैं, इस का मतलब यह है कि कनया के नज़दीक कोई भूत प्रेत न आवे और आवे तो लोहे को देखकर भाग जावे।

फिर सात कोरे सर्वों में तेल हल्दी भर कर एक घास की कूंची बनाती हैं कनया की माता, अपना वस्त्र उठाकर गोद में ले बैठती है इस समय एक ब्राह्मण का लड़का यानि प्रोहित जी का पुत्र कनया के पास बरकी जगह बिठाया जाता है।

यह बात मनुस्मृति में लिखी है कि जो चीज़ पहिले ब्राह्मण को दिये यजमान भोजन वा अंगीकार करता है उसकी सात कुलें नरक को जाती हैं, फिर क्यों न हो स्त्रियें भी तो इन्हीं चीज़ों में शुमार की जाती हैं, वग़ैर पहिले ब्राह्मण को दिये कैसे अंगीकार करलें ! बहुत लोगों में दस्तूर है कि पहिले ब्राह्मण के लड़के से फेरे दिये जाते हैं मगर आज कलके लोग इसमें शरम गिनते हैं तब भी एक पीपल के पेड़ से जो साक्षात ब्राह्मणों का स्वरूप माना जाता है पहिले फेरे देलेते हैं बाद बर के साथ दिये जाते हैं।

वही सात स्त्रियें तैल हल्द से कूची छुआ कर सात दफ़ा कना के पहिले पांवों घुटने कन्धे माथे पर छुवाती हैं और चार सुहागन स्त्रियें एक लाल वस्त्र बतौर सायबान के इनके ऊपर तानती हैं और कुछ गीत गाती जाती हैं फिर वही सातों कनया को उबटन लगाती हैं जो खास इस समय के लिये बनाया जाता है फिर नायन कनया को अस्नान कराती है, वही सातों सात दफ़ा कनया की आरती करती हैं और कङ्गण में सात गांठें लगाती हैं फिर इस समय नायनको कनाके सिरसे वार २ सब कुटम्बने नौछावर देती हैं, इसी तरह नौ या सात या पांच या तीन दिन जैसा प्रोहित जी बताते हैं बराबर उतने दिन किया जाता है।

फिर इसी दिन प्रोहित जी कुल देव अस्थापन करते हैं, पहिले इन को कुछ रुपया देना पड़ता है नहीं देते तो कहते हैं कि हम तुम्हारे कुल देव का भार उठाते हैं देवताओं को कैद करते हैं, जो मांगेंगे वही लेंगे; इस समय अपनी तौफ़ीक

से बाहर भी लोग देदेते हैं तब भी इन का मुख सीधा नहीं होता, कुलदेवकी मूर्ति किसी के फ़कत हाथ का थापा ही लगाया जाता है किसी के चूहे की, सांप की उल्लू की चील की मूर्ति लिखी जाती है और उस के ऊपर एक परदा डाल दिया जाता है ताकि कोई देखने न पावे एक दीपक घीका बाल कर धर देते हैं जो बराबर रात दिन बलता रहता है और बहुत चीज़ें पकवान, वस्त्र, बरतन, इन के आगे धरे जाते हैं, और सब विवाह की चीज़ों में से कुलदेव के नाम की निकाल कर वहां रख देते हैं, उस मकान में सिवा प्रोहितानी के और कोई नहीं जाने पाता।

हा! क्या शोक का समय आगया है कि तमाम दुनियां के कुलों का जो सर्वशक्तिमान कुलदेव है उसे त्यागकर उसकी जगह अविद्या के वश में हो लोग इन चीज़ों की स्थापना कर पूजा करते हैं।

फिर यहां ही देवताओं को क़ैद किया जाता है अर्थात् एक कोरे बरतन में कई चीज़ें डालते जाते हैं और मिट्टी के पारे से उसका मुख बंदकर चारों ओर गीला आटा लगादिया जाता है और बंद करते समय प्रोहित मंत्र पढ़ते हैं, आंधी, मैह, ओला, आग, बिजली, बिल्ली, चील, कुत्ता काका और सब जानवरों के नाम लेकर कहते हैं कि तुम सब इस में बैठो विवाह के बाद तुम्हारा खूब न्योता करेंगे इस विवाह में तुम कोई विघ्न मत करना, फिर इसे भी कुल देव के स्थान में धर देते हैं।

कोई ऐसा विवाह नहीं देखा जिस में जानवर कोई चीज़ खराब न करते हों या मैह आंधी न आता हो या प्रोहित जीके विवाह में ओले न पड़ते हों, यहां भोले यजमानों को फुसलाने को प्रोहितजी कहते हैं कि देखो हम तुम्हारे विवाह की कहां तक रक्षा करते हैं कि देवताओं तक को भी क़ैद करदेते हैं, सिवा हमारे दूसरे की यह सामर्थ नहीं।

विवाह के एक दिन पहिले मढ़ा गाड़ा जाता है, पहिले कन्या से कुछ पूजा कराते हैं फिर खुद होम जप वग़ैरा करते हैं, कन्या इस समय रोती जाती है, प्रोहित जी मढ़ा लाते हैं, किसी के केवल एक बांस ही होता है, किसी के चार बांस, किसी के आम का पेड़ लगाया जाता है किसी के केला ढाक, अनार, किसी के लकड़ी का बनता है, क़रीब बारह फ़ुट के ऊंचा खंभ

जिस के चारों ओर चराग़ रखने की जगह बनी होती है गेरू से रंगाजाता है, इस की रंगवाई भी प्रोहित को कुछ देना होती है, उसको बीच आंगन में गाड़ते हैं, उस के ऊपर सात सरवो में छेद्कर उलटे लटका देते हैं और एक घास की गठरी ऊपर के सिरे पर बांध दी जाती है।

फिर इस के चारों ओर आठ आठ फ़ुट के बांस गाड़कर चार बांस ऊपर बांधते हैं ऊपर सुरख़ रंग का कपड़ा ताना जाता है चारों कोनों में सात २ मिट्टी के बरतन बतौर गाउदुम के रखकर सातों क़िसम के अनाज भर दिये जाते हैं, बीच में एक पानी का कलश रक्खा जाता है, इस के चारों ओर आम के पत्तों की बंदनवार बांधी जाती है और एक चिराग़ हर वक़्त जलता रहता है।

फिर इसी दिन कन्या की माता अपने कुटंब की स्त्रियों को साथ लेकर नारियल बताशे कुछ वस्त्र रुपया नाइन से उठवाकर गीत गाती हुई अपने पिता के घर जाती है जिस को भात मांगना कहते हैं, गीत जिस में सब चीज़ें वह मांगती है गाती हैं।

फिर इस के माता पिता भाई बांधव इसको अपनी यथाशक्ति देते हैं, उसी माफ़िक़ गाते हुई बहिन के घर लाते हैं जिस में ख़ास करके यह चीज़ें ज़रूर होती हैं एक सुपेद कपड़े का चोला, सुरख़ चुनड़ी, नथ, पांव के छल्ले, कान में बाली; यह चीज़ें ग़रीब भी कन्या के वास्ते देता है और सब कुटम्बियों के वास्ते वस्त्र भूषण देता है।

इन को कन्या की माता मढ़े के नीचे बैठकर पहनती है, पहिले प्रोहित नाई को जोड़ा पिन्हाया जाता है, फिर सब कुटम्बियों को; यहां भी कन्या रोती है।

अब बरात का हाल सुनिये।

जब जानते हैं कि बरात निकट पहुंची पहिले प्रोहित जो शहर के बाहर बर से कुछ पूजा कराते हैं बाद इस के एक आदमी ख़बर देने आता है जिस को कपड़ा और कुछ नक़द कन्या का पिता देता है, फिर कन्या का भ्राता बांधव सहित, खाने की चीज़ें, और शरबत और उन की पूजा का सामान बर के वास्ते नारियल, वस्त्र, एक परात, एक

पानी की भाड़ी साथ लेकर जाता है, पहिले कन्या का भ्राता बरके पांव धो शरबत पिलाता है फिर बर के पिता भ्राता सब बांधवों को एक अलग मकान में ठहरा देते हैं।

फिर बर की तरफ़ से एक प्रोहित और मान्य कुछ वस्त्रादि कन्या के लिये लाते हैं, इन की बहुत खातिर की जाती है खाना इन के आगे इतना रखा जाता है कि जितना एक आदमी दस दिन में खासके, मगर यहां उन लोगों को एक ग्रास उठाने का हुक्म नहीं, एक एक रुपया अपनी ओर से उस में डाल देते हैं जिसे नाई उठाकर लेजाता है फिर सब लोग इन को बहुत हंसी करते हैं, जूतिओं का हार बनाकर गले में पिन्हाते हैं, पुराने वस्त्र स्त्रियों के लहंगा आदि उन के ऊपर फेंकते हैं, स्त्रियां गालियां देती हैं, चलती समय पीठ पर स्त्रियां दोनों हाथ से थापे लगाती वस्त्र रंग देती हैं, बाद बहुत हंसी के कुछ वस्त्र रुपया देकर विदाकरते हैं।

उधर बर को अस्नान करा भूषण वस्त्र पहिना घोड़े पर सवार कर सब बराती पैदल आतिश बाज़ी नाच तबल आदि कई तमाशों सहित समधी के द्वार पर आते हैं, प्रोहितजी बर से पहिले दरवाज़े की पूजाकराते हैं फिर कन्या का पिता आरती कर बर को कुछ धन देता है नायन कन्या को गोद में लाकर मुख में चांवल भरवा बर पर सात दफा थुकवाती है।

वाहरे बुढ़िया पुराण के मानने वालों को अकिल! एक आदमी के ऊपर थूककर बश में किया चाहती हैं, इन हरकतों से अगर किसी के मन में थोड़ी बहुत चाह भी होगी वह भी जाती रहती होगी, उलटी उस के मन में एक प्रकार की घृणा अवश्य होजाती होगी।

फिर बर सहित बरात लौट जाती है, अब कन्या का पिता बटेरी भेजता है आटा, दाल, चांवल, घी, नमक, मिरच, मसाला, बड़ी, मंगौरी, पापड़, हल्दी, पकवान, पिट्ठी, और दही।

इन की कुछ मर्याद नहीं जितना तौफ़ीक हो देते हैं, मगर कई चीज़ें ज़रूर ही देनी पड़ती हैं, मसलन पिट्ठी इकतीस सेर से ग्यारह तक, दही के ढाईसे मटके जिन में क़रीब तीन २ मन के दही आजाये पांचसो मटकों से लेकर सवासो तक, हज़ार लड्डू से लेके ढाईसो तक, मट्ठा, पापड़ वज़न में पांच

सेर से सवा सेर तक, गिनती सौ से ग्यारह तक, और इसी तरह पिरांक मांड़ी और बरतन भी इतने ही दिये जाते हैं।

बहुत लोग चांदी के बरतन देते हैं, गरीब एक चार आने का प्याला ही बनाकर रखदेते हैं, इन सब चीज़ों को एक जगह रख बीच में चौकी पर कन्या को बिठा और जो भूषण रुपया देना होता है सब कन्या के आगे धर देते हैं, माता पिता आपस में वस्त्र बांधकर इस के चारों ओर सात दफा फिरते हैं, कन्या बड़े आरत स्वर से रोती है, प्रोहित जी कुछ मंत्र पढ़ते जाते हैं, हरएक फेरे में पिता कन्या के चरण छूता जाता है।

फिर बर की सब चीज़ बांधवों सहित लेकर कन्या का पिता बरके अस्थान पर जाता है जिसे मिलनी कहते हैं यहां सब लोग आपस में बग़लगीर होते हैं, कन्या का पिता बर के पिता से, भ्राता भ्राता से, चचा चचा से, मामा मामा से, बाबा बाबा से, प्रोहित प्रोहित से, नाई नाई से, कहार कहार से, सब लोग बरातियों से मिल मिल कर अपनी तौफ़ीक़ के माफ़िक रुपया देते जाते हैं, फिर दोनों ओर से नाई प्रोहितों को जो इस समय को लोक है दीजाती है।

इधर वही सातों स्त्रियां कन्या का तेल उतारती हैं याने सिर से पावों की तरफ, फिर उस पानी में स्नान कराती हैं जो कन्या का भ्राता स्त्री सहित एक ही हाथ से भरकर लाता है, सीकों के टोकरे को औंधा धर उस पर नहलाती हैं जिसे खारा भी बोलते हैं।

फिर बर की तरफ से यह चीज़ें आती हैं, मेहदी, रोली, रंगीन सूत, फुलेल, कंघी, जूती, मेवा, वस्त्र, कुछ भूषण जो ख़ास इसी समय पहिने जाते हैं, इन्हीं सब चीज़ों से एक स्त्री कन्या का सीस गंधती है यानी सिर के बालों को आधा आधा कर माथे पर दो सींगों की नाईं बना देती है, और उन में कुछ सूत लटका दिया जाता है, ताकि गौ के सींग और कान बिलकुल मालूम हों, और हक़ीक़त में गौ की शकिल बनाती हैं, इसका यह मतलब है (जोकि दरयाफ़्त करने से मालूम हुआ) कि जिस समय कन्या का हाथ बरकेहाथ में दिया जाता है तो असी करोड़ जिन, राचस, भूत, यच्च कन्या पर हमला करते हैं, मगर गौ की सूरत देख लौट जाते हैं।

हा! प्रेत, जिन, राचस तो इस गौ पर रहम करते हैं मगर माता पिता सब से

ज्यादा बेरहेम हैं जो इस अनाथ को गौ के समान एक बग़ैर जान पहिचान आदमी के संग करदेते हैं !

देखो अंगरेज़ लोगों को कि विवाह के समय खूबसूरत पोशाक पहिन अपनी खुशी से एक दूसरे का हाथ पकड़ते हैं, वहां कोई भूत प्रेत हमला नहीं करता; परमेश्वर जाने यह जेहालत के भूत प्रेत कब हिन्दुस्तान में बग़ैर दुम की गौओं का पीछा छोड़ेंगे !

फिर मेहदी, रोली, भूषण, सुपेद चोला, पाओं में जूती पिन्हाकर गौरी की पूजा कराती हैं, कई लोगों में कन्या घर से बाहर किसी और अस्थान में पूजने को जाती है. कितनों में इस समय कुम्हार का चाक पुजवाने लेजाती हैं किसी में कन्या धोबन के घर सुहाग मांगने जाती है धोबन को वस्त्र भूषण दे उस के मांग में सिन्दूर लगा दोनों हाथ जोड़ कन्या कहती है कि माता मुझे सुहाग दे तब धोबन खुश हो अपनी मांग से सिन्दूर कन्या की मांग में लगा देती है, तब स्त्री खुश हो गीत गाती हुई कन्या को घर ले आती हैं।

फिर इस समय एक मीरासन या डोमनी को घर बुलातीं हैं या कन्या को वहां लेजाती हैं, वह ढोल बजा कुछ मियां आदि देवताओं के गीत गाती है इस का मतलब है कि अगर कन्या के सिर पर मियां या और कोई देवता हो तो इस समय बख्श दे क्योंकि अगर संग विवाहा जावेगा तो फिर पीछा न छोड़ेगा: पस इस समय नारियल या बकरा या सवा रुपया देकर बखशवा लेती हैं।

क्या खूब होता अगर जेहालत के देवता से बखशवा कर शादी को जाती कि तमाम उमर खुशी से रहते ! मगर ये देवता तो चाहे करोड़ रुपया देवें तब भी नहीं पीछा छोड़ेंगे।

फिर कन्या का भ्राता अकेले बर को लेआता है, बहुत लोगों के यहां कन्या को कंबल में लपेट बर के घोड़े के नीचे तीन दफा निकालते हैं, बहुत लोगों में दरवाजे पर कन्या को डोले में बिठाकर बाप भ्राता उठा कर बर को तीन प्रदक्षिणा लेआते हैं, बहुत लोगों में कन्याका मामा गोद में लेकर बर की तीन प्रदक्षिणा करता है, हर फेरे में फूल की छड़ी कन्या के हाथ से बर के सीस पर कुआ के फेंकता जाता हैं, कन्या उच्चस्वर से रोती जाती है, फिर दोनों को उसी मढ़े के नीचे बिठादेते हैं, यहां प्रोहित बड़ा भारी

चौक पूर शायद तेतीस करोड़ देवताओं से भी ज्यादा की पूजाकराते हैं, कनया के माता पिता से होम आदि कराते हैं, फिर पिता मुख खोलकर कनया का बरको दिखाता है फिर दोनों के हाथ हल्दी से पीलेकर देते हैं, फिर कनया का हाथ बर के हाथ में पकड़ा देते हैं और कहते हैं कि यह कन्या तुम्हारे लायक नहीं केवल घर की टहल को दी है, फिर स्त्री सहित दोनों के पांव धोकर सिर में लगाते हैं और कुछ सोना देते हैं, इसी तरह सब बांधव लोग स्त्रियां पांव धो धोकर सोना देते जाते हैं और साथ साथ प्रोहित जी को भी कुछ दिया जाता है इसी को "कन्या दान" कहते हैं, फिर बर कन्या के गले में बांह डालकर होम की चार प्रदक्षिणा करता है, हर फेरे में कन्या का भ्राता धान की खील दोनों के ऊपर फेंकता जाता है, तीसरे फेरे में कनया को बिठा देते हैं, प्रोहित जी बतौर वकील के कनया की ओर से कुछ इकरार कराते हैं, जिन का मतलब है कि कनया कहती है कि दरखत पर न चढ़ना, बहुत गहरे पानी में न जाना, मेरे सिवा दूसरी स्त्री से प्रीति न करना; इस के जवाब में बर की ओर से भी प्रोहित जी कहदेते हैं कि तू भी अनघर में बास मत करना, न बहुत बोलना, न किसी पुरुष से बात करना, फिर कनया को उठाकर चौथी प्रदक्षिणा कराते हैं, तब कनया बाएं अंग बैठती है, फिर बर से कुछ इकरार कराया जाता है, बर कहता है कि मैं तुझ को ऐसा प्यार करूंगा जैसे महादेव पार्वती को विष्णु लक्ष्मी को इन्द्र इन्द्रानी को ब्रह्मा ब्रह्माणी को गणेश सरस्वती को अग्नि स्वाहा को करते थे और बहुत देवताओं के नाम लेते हैं जिन में स्त्रियों से प्रीति थी, फिर कनया भी कहती है, कि मैं भी तुझे ऐसा ही प्यार करूंगी जैसा इन स्त्रियों ने अपने स्वामियों से किया था रुक्मणी ने कृष्ण को सीताने रामचन्द्र को पार्वतीने महादेव को लक्ष्मीने विष्णु को स्वाहाने अग्नि को द्रौपदीने पांडवों को रोहिणीने चन्द्रमा को रेवतीने बलभद्र को सकुंतलाने राजा दुषन्त को, यह सब प्रोहित जी या पंडित जी संस्कृत भाषा में पढ़देते हैं।

इस से साफ़ जाहर है कि शादी उस उमर में करनी चाहिये जब दोनों प्रीति और शादी को समझ सकते हों और कनया बर दोनों विद्या पढ़लें क्योंकि बग़ैर विद्या के इन इक़रारों को कोई नहीं समझ सकता।

जब पुरुष स्त्री दोनों कहलेते हैं कि एक दूसरे के विरुद्ध कोई काम न करेंगे न अन्य मुख देखेंगे तब कन्या को दाहने अंग बिठा देते हैं।

क्या खूब होता अगर दोनों के इक़रार एक काग़ज़ पर लिखवा लिये जाते और दोनों ओर से दस्तख़त होजाते!

यह तब होसकता है जब एक दूसरे से खुशी से कहे, और जब वह जानता ही नहीं कि यह विवाह है या कोई तमाशा है तब क्योंकर इक़रार पूरा करेगा, मगर बड़े आश्चर्य की बात है कि जिन के घर सात २ स्त्रियां बैठी हैं वे भी इस समय कह देते हैं कि दूसरी स्त्री का मुख न देखेंगे, और होमहोने बाद फिर दूसरे विवाह का बंदोबस्त करलेते हैं, बाईं तरफ का मतलब है क्रोध दाहनी तरफ का खुशी, जैसे महादेव के विवाह में पार्वती गंगा को यानी अपनी सौत को देखकर क्रोधित हुई थी वैसे ही आज तक वही नक़ल मान्दि राम लीला के पंडित जी कराते रहते हैं और कोई नहीं समझता कि पंडित जी किस विलायत की ज़बान में चूंचूं करते हैं।

यहां प्रोहित जी एक दम से हाहाकार कर उठते हैं कि बर पर बड़ा भार पड़ा है कुछ दान कराओ ताकि भार हलका हो, (प्रोहित जी पर अपनी शादी के समय भार नहीं पड़ा था) सब लोग अपनी तौफ़ीक़ के माफ़िक दोनों तरफसे गौ, सोना, अनाज, वस्त्र दान करादेते हैं,बहुत बरके सिर से मुरग़ा कबूतर उतार कर छोड़ देते हैं, बाद इस के दोनों ओर के प्रोहित दोनों के कुलों का नाम लेलेकर उच्चस्वर से कहते हैं कि फलाने का पड़ पुत्र फलाने का पौत्र फलाने का पुत्र, फलाने की कन्या से विवाहा गया, इस को "साखा चार" कहते हैं ; इस का मतलब है कि लोगों को मालूम हो कि फलाने की कन्या फलाने के साथ विवाही गई।

क्या खूब हो किसी अख़बार में छपवा दिया करें ताकि सारे मुल्क को मालूम होजाय और खर्च भी कम हो।

इन दोनों प्रोहितों को दोनों ओर से जो लोक मुक़र्रर है दीजाती है, बीड़ा दुशाला अशरफियां, फिर नाई भाट इन्हे भी इतना ही दिया जाता है और भी नाई प्रोहित आते हैं क़रीब हज़ार हज़ार नाई प्रोहित के जमा होजाते हैं इस समय दोनों तरफ से सब को यथा शक्ति दियाजाता है।

फिर सब लोग अपने अपने अस्थान को चले जाते हैं, स्त्रियां बर कन्या को कुलदेव के आगे लेजाती हैं, बर को जूती कपड़े में लपेट कुलदेव की जगह धर देती हैं और बरसे कहती हैं कि यह तुम्हारे कुलदेव हैं इन की पूजा करो, पूजा न करे तो भी हंसी करती हैं अगर करता है तो जूता खोलकर हंसी करती हैं, शायद यहां बर के पहचानने की ताकत का इम्तहान है, फिर बर से छंद पढ़वाती हैं और हर एक स्त्री एक छंद सुनरुपया देती जाती है।

छंद खास इस समय के लिये मूर्ख स्त्रियां बनालेती हैं, न छंद का अर्थ जानती हैं न पद, सास के वास्ते जो छंद पढ़ा जाता है बतौर नमूनें के एकलिखा जाता है—छंद पकियां छंद पकियां छंदके ऊपर सुरमा, तेरी बेटी को ऐसे रक्खूं जैसे आंखों में का सुरमा- यहां बरकी शायरीकीताकत देखने का इम्तहान है।

फिर सब स्त्रियां चांदी के प्यालोंमें दोनों को शरबत पिलाती हैं, कुछ खाना कन्या का झूठा बरको खिलाती हैं फिर कुलदेव के आगे चढ़ा कर प्रोहित कोदेदेती हैं, फिर दोनों के सिर पर वार २ रुपया नाई को देती हैं।

फिर कन्या के मुख का झूठा पान बर को खिलाती हैं, एक सुपारी जिसे कन्या दिन भर मुखमें रखती है बर को खिलाई जाती है और कन्या की जूती की बराबर कोई चीज़ तौलकर बर को खिलाती हैं, इन सब का मतलब है कि बर कन्या के आधीन रहे।

फिर दूसरे दिन बरात कीजियाफत होती है. इस समय स्त्रियां बरातियों को खूब वाहियात गालियां गाती हैं और बराती भी उन को गाली देते हैं, गालियों में ऐसे खराब सवाल जवाब आपस में करते हैं कि जिन को कोई अशराफ आदमी सुन कर नहीं सहार सकता।

फिर दूसरे दिन बर कन्या को एक ही अस्थान में असनान कराया जाता है दोनों को वस्त्र भूषण पहनाय आरती कर चौपड़ खिलवाती हैं फिर कन्या का कङ्गण बर खोलता है अगर नहीं खोलसकता तो स्त्रियां खूब हंसी करती हैं, फिर इसी तरह बर का कङ्गण कन्या खोलती है, स्त्रियां सिखा देती हैं कि बर का कङ्गण अपनी जूती के नीचे दबा देना ताकि वह हमेशा कन्या से दबता रहे इसी तरह आपस में एक दूसरे का कङ्गण छीनते हैं, फिर एक परांत में पानी भरकर दोनों कङ्गण एक रुपया एक अंगूठी स्त्री ऊंचे से फेंकती है और

कहती है जो एक बाप का होगा वही लेगा, इसी प्रकार सात बार फेंकाजाता है, इसे बर कन्या दोनों पकड़ने को झपटते है आखिर कन्या ही को जिताती हैं और ताली बजा कहती हैं कि हारगया हारगया कन्या जीत गई जीत गई फिर दोनों को आपस में मुट्ठी खुलवाती हैं, तब भी बर की बहुत हंसी करती हैं, फिर दोनों की गांठ जोड़ जहां मट्टी खोदते हैं लेजाती हैं वहां कुछ लिख कर पूजा करा बर से मिट्टी खुदवाती हैं, यह भी बर की जिसमी ताक़त देखने का इम्तहान है।

क्या अच्छी बात हो अगर यही सब इम्तहान शादीसे पहिले लेलिये जावें!

फिर बर की ओर से वरी आती है, इस में बहुत सोने चांदी का ज़ेवर होता है जिन के पास नहीं भी होता वे भी इस समय मांग के धर देते हैं, और कई जोड़ा कपड़ा सिवा इन के चार परांतों में गीली मेहदी दो में सूखी, दो- में रोली, इक्कीस परांत में मेवा, इक्कीस में हर किसम की मिठाई, खिलौने, सोने, चांदी, पीतल, रांग, काठ की गुड़ियां होती हैं।

जब जानती हैं कि वरी दरवाज़े पर आई तब एक स्त्री जो घर में बुड्ढी होती है दरवाज़े के दोनों कोनों में तेल डाल देती है, फिर वही स्त्री बीच में बैठ कर सबको दिखाती जाती है और हर एक चीज़ का आधा रखती जाती है, इस में भी प्रोहित नाई की लोक आती है, एक एक जोड़ा होता है, बाद इस के वही मेंहदी बर कन्या के लगाई जाती है, और फिर दोनोंको स्नानकराया जाता है।

एक स्त्री जिसका पति जीता हो अपनी गोद में मेवा और माथे पर टीका लगाकर कन्या का सिर गूंधती है, कन्या यहां रोती है, यह सिर खास इसी समय गूंधा जाता है, जिस में कम से कम पाव भर सूत लगता है, फिर सब भूषण वस्त्र पहिना माथेपर बिन्दी लगाती है, यह टीका भी खास इसी समय और ही होता है, चांवल पीसकर उस में हल्दी मिलाई जाती है, मांग में सिन्दूर और यही चांवल मांगसे कान तक बालों पर लगते हैं फिर मुख पर आंखों के नीचे ठोड़ी तक जिस में जगह जगह रोली और सूखे चांवल लगते फिर हाथों पर भी फूल के मानिन्द लगता है, पावों पर भी फूल हो, इसी प्रकार बर के लगता है फिर दोनों को चौकी पर बिठाकर आर्ती

होती है, जिस में बर कुछ देता है फिर दोनों के ऊपर पानी वार के फेंका जाता है, राई नमक मिरच वार के पहिले डालती हैं, राख की पत्ती वारकर पिछवाड़े फेंकती हैं, फिर कुलदेवके स्थान में पूजाकराती हैं।

इधर विदा की त्यारी होती है, अब जो वस्तु कन्याको देनी होती है बिरादरी के बीच में धर देते हैं, ज़नाने जोड़े सौ से सात तक, मरदाने पचास से पांच तक और और असबाब पलंग, चौकी, डोला, घोड़ा, गाय, भैंस, ऊंट पीनस, रथ, फ़रश, तोशक, निहाली, चादर. तकिया, डोरी, बर की माता को भूषण, वस्त्र, और वाहियात चीज़ें दीजाती हैं, जिन का नाम लिखना निहायत शरम में दाखिल है, एक आंटे का पुरुष बनाकर सब अंगों सहित देते हैं, जिस का नाम बर का पिता करार देती हैं, और उस के हर एक वस्तु पर पुरुष के अंग का आकार बना देते हैं।

फिर सब बरातियों को बर समधी सहित एक एक जोड़ा वस्त्र एक एक चांदी का प्याला रुपया बताशे नारियल सहित रोली का टीका चौकी पर बिठा बिठाकर दिया जाता है।

बहुत लोगों में बर कुछ दस्तूर की बमूजिब कन्या को गोद में उठा कर पलंग पर बिठाता है, बर कन्या के आगे पलंग पर एक थाल धराजाता है जिस में कन्या का पिता पहिले रुपया रखता है यहां भी रुपया ग्यारहसौ से लेके पचास तक दिये जाते हैं बाद इस के सब बांधव रुपया इसी थाली में डालते हैं।

माता पिता भाई भौजाई आदि सब बांधव स्त्रियों सहित गांठ जोड़कर पलंग आदि सब चीज़ों की सात प्रदक्षिणा करते माता हाथ में पानी की झाड़ी लेती पिता धान डालताजाता है इसी प्रकार पलंग के चारों ओर धान बोते हर फेरे में प्रोहित जी कुछ मंत्र पढ़ते थे बर कन्या के पांव छूते हैं फिर देहली के बाहर दोनों को बिठाकर देहली पर कुछ चित्र लिखकर कन्या पूजती है, यहां कन्या बड़े आरत स्वरसे रोती है सब बांधव कन्याको गले लगाय लगायके रोते हैं, स्त्रियां जो खास इसी समय के गीत हैं रो रोकर गाती हैं, यहां बड़े से बड़ा सख़त दिल आदमी भीइन गीत और उसके आरत स्वर पर आंसू बहाता है, कन्या पुकार पुकार कर कहती है हाय! पिता मुझे बग़ैर अपरा-

ध अनाथ के समान न जाने पुरुषों के साथ त्याग करते हो, हाय माता ! मैं तुम्हारे बिना कैसे प्राण धारण करूंगी, हाय भगनियो ! मैं ऐसे लोगों में कैसे समय काटूंगी जो न मुझ को जानते हैं न मैं उनको, हाय भ्राता ! मैं तुम से अलग कैसे रहूंगी !

इसी प्रकार रोती हुई को डोले में बिठा देते हैं, बहुत स्त्री पुरुष दूरतक पहुंचाने जातेहैं कन्या पुकार पुकार कहती है कि हाय बांधवों मुझ अनाथनी को मृतक के समान त्याग किये जाते हो! यहां भी प्रोहित जी को कुछ देना पड़ता है, कहार आगे पानी का घड़ा लेकर खड़ा होता है उस में भी रुपया डाल देते हैं, फिर कहारी नायन कन्या को शरबत पिलाने जाती हैं उन्हें भी देना पड़ता है, यहां भी नाई नायन कहार ब्राह्मण प्रोहित बहुत इकट्ठे होते हैं समधी की ओर से यथाशक्ति सब को दिया जाता है बर का पिता बाजा आदि सब सामान सहित बिदा होता है, यहां बर कन्या के ऊपर बहुत रुपया अशरफी पैसे कौड़ी फेंकता है जिस के उठाने को हज़ारहा फकीर इकट्ठे हो जाते हैं।

बहुत बरातों में कई फकीरों की जान इस उठाने में चली जाती है, कभी कभी बर को भी घोड़े से गिरादेते हैं, यह बखेर समधी के दरवाज़े से गांव के बाहर तक जरूर कीजाती है, मगर लोग नाम के वास्ते अपने घर से लेकर समधी के दरवाज़े तक करते हैं, जब कन्या का पिता हाथ पकड़ता है तब बंद होते हैं, ग़रीब से ग़रीब के भी इस वाहियात् रीति में बीस रुपया खर्च होजाते हैं।

फिर कन्या का पिता बहुत प्रकार का भोजन कुछ वस्त्र रुपया साथ लेकर समधीसे मिलने जाता है और हाथ जोड़कर बर के पिता के पांव छूकर कहता है कि हम किसी योग्य नहीं हमारी कन्या तुम्हारे योग्य नहीं केवल घरकी टहल करेगी तुम्हारी दासी होकर रहेगी, और कन्या को भी यह कहता है कि सर्वदा अपने सास सुसर के अनुसार चलना हर रोज़ सबसे पहिले उठना बग़ैर किसी के कहे घर का काम करना, जिस काम में घर के नाराज़ हों कभी उस का खयाल न लाना, स्वामी के विरुद्ध कोई बात न करना, सर्वदा अपने से बड़ों को पांव छूकर प्रणाम करना, स्वामी या घर के ग़मगीन हों तो

आप भी ग़मगीन होना, खुश हों तो आप भी खुश होना, इसी प्रकार की बहुत शिक्षा देकर विदा करता है और बर को अपने साथ मढ़े की गांठ खुलवाने लेआता है, बर जब गांठ खोलता है जब अपने मुख मांगा ले लेता है फिर बर को वहीं तक पहुंचा आते हैं।

फिर इसी दिन बहुत ब्राह्मणों को भोजन दान करते हैं, प्रोहित जी को बहुत कुछ देकर विदाकरते हैं, कुल देव का प्रोहित उन का विसर्जन करते हैं, देवतों की ज़ियाफ़त होती है कैद से छूटते हैं, मढ़े का समान बंदनवार आदि सब दरिया में बहाया जाता है, फिर उसी स्थान में कुछ चित्र लिखकर वर्ष भर बराबर हर रोज़ स्त्रियां पूजाकरती हैं, जो कन्या कुमारी हो जिसका विवाह न होता हो उसे इस जगह स्थापन कराने से उस का जल्दी विवाह हो जाता है, बहुत स्त्रियां अपनी कन्या को यहां लाती हैं, गोया यह भी एक करामाती जगह बनजाती है।

हमने कभी नहीं सुना न देखा कि बग़ैर शादी का बंदोबस्त किये विवाह होजाता हो! मेरी माताने इसबार मुझे ऐसी जगहाओं में स्नान कराया मगर शादी चौदह वर्ष की उमर में हुई।

बाद इस के वही धान जो पलंग के चारों ओर फेंके गये थे गंगाजी में बोहे जाते हैं, अगर माता पिता नहीं जासकते तो किसी के हाथ भेजते हैं, जैसे मुरदे के हाड़ गंगा में डालने का पुण्य है वैसे ही इन धानों के डालने का भी बड़ा पुण्य जानते हैं।

इस बुढ़िया पुराणके दस्तूरोंने लोगोंके दिल में ऐसी जड़ पकड़ी है कि कोई आदमी इन के बग़ैर शादी नहीं करसकता, कन्याओं की बड़ी अवस्था होजाती है, रात दिन रोती हैं, पासखाने को नहीं होता चारपांच कन्या हुईं तो तमाम जिंदगी ही खराब होगई एक दो की घरका ज़ेवर बेच शादी करते हैं एक आधी के वास्ते क़रज़ करते हैं, आखिर क़रज़ भी कोई नहीं देता तब लाचार हो प्रोहित जी के ज़रिये से बर से मांगते हैं, जब बर भी नहीं देता तो बेशरमी धर कन्या के खड़े दामकर इन रस्मों को पूराकरते हैं।

तमाम दुनियां में बदनामी करा भड़वा बनते हैं मगर इस में ज़रा कमी नहीं होती, अगर पैसे की जगह इन सब रस्मों में कौड़ी खर्चीं जावे तब भी

कम से कम दोसौ रुपया खर्च होता है जिस में कन्या को बहुत ही मिलता हो तो बीस रुपया के जेवर से ज्यादा नहीं मिलसकता सो भी सुसरालये छीन लेते हैं।

अमीर लोग यहां तमाम जादाद खर्चकर देते हैं बनिये जिन की कौम मशहूर है कि कौड़ी २ कर जमा करते हैं इन रस्मों के समय ऐसे फैयाज़ बन जाते हैं कि हातम और विक्रमादित्य इन से सखावत सीख जांय।

इन सब रस्मों से सिवा नुकसान के फ़ायदे की उम्मेद क़यामत तक नहीं होसकती; हे परमेश्वर जल्दी वह दिन दिखा कि हिन्दू प्रेतों की पीड़ा से छूटकर इन बेहूदी रस्मों के जाल से आज़ाद हों!

अब बुढ़िया पुराण से पुत्र के विवाह के दस्तूर लिखे जाते हैं

उसी तरह प्रोहित जी से पूछकर लग्न तेल हल्द मढ़ा कुलदेव आदि सब किया जाता है, देवताओं की कैद कङ्गण सब वैसा ही होता है बाद इन सब रस्मों के जिस दिन वर घोड़ी पर सवार होता है तब उसको अजीब शकल बनादेते हैं, चाहै छोटी अवस्था हो चाहै बड़ी जेवर सब को पहनाया जाता है रंगीन कपड़े हाथों पांवों में मेंहदी रंगीन ही जामा रंगीन ही पाजामा सुरख पगड़ी गिनती में नौ कपड़े इस समय होते हैं, नाई स्नान कराता है भाई कपड़े पहनाता है, भौजाई आंखों में काजल लगाती है, एक आंख में लगादेती है जब मुख मांगा नेग लेलेती है तब दूसरी में लगाती है, फुआ मुहपर सरबट लगाती है, उसी माफ़िक़ तमाम चेहरे पर पीले रंग की लकीरें करदेती है, वह भी नेग लेती है बहिन अपना नेग लेकर आरती करती है, राई नोन उमिरच वारती है बाप ज़ेवर पहनाता है माली सेहरा लाता है इसे भी मुह मांगा देना पड़ता है, बाबा सिर पर सेहरा बांधता है पहिला सेहरा ताश का दूसरा फूलों की सात लड़ें जो पावों तक लटकी रहती हैं, प्रोहित जी अपना दस्तूर लेकर सिर पर ताज रखते हैं कोई कोई चांदी का कोई काग़ज़ का जिसे मौड़ भी कहते हैं, बहनोई कमर से तलवार बांधदेता है अगर तलवार न हो तो लोहे की कमची बांधदेते हैं, नाई पांवों में जूता पहनाता है यह भी अपना नेग लेता है, कहार नेग लेकर वर को गोद में उठाता है, इस समय एक और लड़का जिस के वर के मानिंद कपड़े होते हैं वह भी साथ उ-

ठाया जाता है और दोनों घोड़े पर चढ़ते हैं, यहां कई लोगों में पहिले बर को गधी पर बिठाकर पीछे घोड़े पर चढ़ाते हैं, फिर जिस समय सवार हो-कर बर चलता है तब माता रूस जातीहै कहती है कि मैंने तुझे पाला दूध पिलाया अब मुझे त्यागकर कहां जाता है पहिले मेरे दूध का मोल देजा अगर नहीं देता तो मैं कुए में गिरती हूं, पस कुए में पांव लटका बैठ जाती है लड़का इस समय कुए के चारों ओर फिरता है, हर फेरे में एक सीक माता को देता है माता कुए में फेंक देती है, सातवीं दफ़ा कुछ रुपया जेवर देकर वह पकड़के उठाता है और कहती है कि गाय भैंस के दूधका मोल होसकता है. माता के दूध का कोई मोल नहीं, मैं तुम्हारी सेवा को दासी लेने जाता हूं; तब माता खुश हो उठ खड़ी होती है, बहिन इस समय घोड़ी की पूजाकरती है माथे पर फूलों का सेहरा बांधती गरदन के बालों में बहुत रंग का सूत लपेट देती वस्त्र ओढ़ाती फिर उस की तारीफ में बहुत प्रकार के गीत गाती नाना प्रकार के भोजन आगे धरती है, जिस समय बर सवार हो चलने लगता है तब बहिन बहनोई बाग रोकते हैं, इन्हें वस्त्र भूषण देकर आगे चलताहै तब प्रोहित जी रोकते हैं इन्हें भी वैसा ही देना पड़ता है फिर नाई को सब कुटुम्बी बर के सिर पर वार २ कर रुपया अशरफ़ी पैसे कौड़ी वस्त्र भूषण आदि देते हैं।

फिर इसी प्रकार सामान के साथ बर के सीस पर काग़ज़ का छतर घूमता हुआ तमाम शहर में फिरकर समधी के दरवाज़े पर जाते हैं, जिस रातको विवाह होता है उस रात स्त्रियां जागरन करती हैं जिसे कुहया नकटौरा कहते हैं, इस में अजीब तमाशे होते हैं, सब कुटुम्ब की स्त्रियां मिलकर रात भर गीत गाती नाचती दूल्हा की माता दुलहन प्रोहतानी दूल्हा बन स्त्रियां बरात चढ़ाती हैं, उसी प्रकार तैल मढ़ा गाड़ आधी कन्याकी ओर होती हैं आधी बर की ओर, प्रोहितानी मरदाना कपड़ा पहन सिर पर मौड़ धर के लोगों में बाजा बजाती तमाम शहर में फिरती हैं जो मरद इस समय इन के सामने आता है उस की बहुत दुर्दशा करती हैं कपड़े छीन लेती मुह पर तरह तरह का रंग मलदेती और बहुत वाहियात गालियां बकती हैं फिर उसी तरह दोनों के फेरे डालती बहू को घर में लाती हैं, जहां बरात परदेश

में जाती है वहां तो जितने दिन तक नहीं लौटती बराबर हर रात को ऐसा ही करती हैं, फिर तमाम कुटुम्ब की स्त्रियां इस दिन कांच की चूड़ी पहनती हैं जिन्हें प्रोहतानी पहनाती है फिर यहां प्रोहतानी कुछ नेग लेकर बहू का नाम धरती है एक कोरी मिट्टी की हांड़ी में सुपारी हल्दी लौंग नारियल डाल कर सात दफा उस में मुह करके बहू का नाम कहदेती है फिर सब को सुना देती है।

फिर सात सुहागन कुछ पूजा कर दुलहन के वास्ते हरे जौ की माला पिरोतीं हैं, हरे न हों तो कई दिन पहिले भिगो रखती हैं, एक सब मेवाओं की माला बनाई जाती है जिस का वजन सवा सेर से ग्यारह सेर तक का होता है, इस में चार गोले सुनहले वरक के मढ़े हुए लगते हैं बदाम छुहारे रुपहरे वर्कों से मढ़ाए जाते हैं, किसमिस लौंग चिरोंजी सब लगती हैं और और छोटी मालायें बनाई जाती हैं, घर की लड़कियां इस समय का नेग लेकर दरवाज़े की दिवालों पर कुछ चित्र लिखती हैं जिस में स्त्री का चित्र नहीं लिखा जाता जानवर भी नर ही लिखे जाते हैं।

जब सुनती हैं कि बरात निकट पहुंची तब दरवाज़े से कुलदेव के स्थान तक तरह तरह के चित्र ज़मीन पर लिख दोनों ओर मिट्टी के सरवे बंद कर रख देती हैं जो मानिंद सड़क के बनाती हैं, बहुत लोगोंके यहां रेशमी कपड़े बराबर बिछा दिये जाते हैं, नहीं एक सतका तो ज़रूर ही बिछाया जाता है जिस के कोनों पर खाने की चीज़ें धरते हैं, फिर सब स्त्रियां पूजा का समान छाज में धर दूलहन को लेने जाती हैं, गांव बाहर ज़मीन पर लिख पहिले दोनों से पुजवाती हैं फिर वही विवाह के वस्त्र पहिना गांठ जोड़ दुलहिन के सिर पर पानी का गड़वा भर एक सूत की अट्टी इस के नीचे आम की टहनी बीच में जिसे घर नायन पकड़े चलती है परदेवालों के इसी तरह सवारी में बिठाते हैं और सब स्त्रियां पैदल गीत गाती हुई दरवाज़े पर आकर खड़ी होजाती हैं तब बर की माता वही पुरुष के आकार वस्त्र पहन कर आरती लेने को आती है दोनों को आर्ती कर वही मेवा जवों की माला दुलहनको पहना देती है, फिर दोनोंके सिरसे पानी वार कर सात घूंट पीलेती है तब दुलहन के हाथ पर हल्दी लगा सात सात थापे दोनों कोलों पर

लगवाती फिर दोनों उसी बिछेहुए वस्त्र पर पांव धरती हुई कुलदेव के स्थान में जाते हैं, दूलह पावों से परवों को फाड़ता जाता है, पीछे पुरोहितानी और लड़कियां यह सब आधा आधा बांट लेती हैं, फिर द्वार रोक खड़ी होजाती है तब भी इन्हें भूषण वस्त्र दिये जाते हैं।

कुलदेव के स्थान में सब गृहस्थी की चीजें धरी जाती हैं वस्त्र रुपया पैसा कौड़ी पहिले पूजाकरा दुलहन का सब चीजों से हाथ लगाया जाता है सब में से पहिले मुट्ठी पुरोहितानी को दूसरी लड़कियों को, पहिली खाने की दूसरी वस्त्र की तीसरी रुपयों पैसों कौड़ियों की, फिर बर का पिता चौकी पर बैठता है उसके आगे स्त्री उसके आगे बड़ा लड़का उस के आगे स्त्री इसी तरह सब सीधी कतार में बैठते हैं अखीर में दूलह आगे दुलहन उस की गोद में कोई लड़का बिठादेते हैं इस के दोनो ओर दो स्त्रियें खड़ीहोकर सात ताग सूत के पूरती हैं बाद इस के सूत को हाथ से हिलाती जाती हैं और मंत्र पढ़ती जाती हैं फिर इस की माला बना हल्दी मं रंग सब आदमी छूकर दुलहन को असीस देते हैं फिर दूलह दुलहन के गले में पहना देता है, तब सब खड़े होजाते हैं फिर सब कुटम्ब के स्त्री पुरुष मिलकर मीठा चांवल का ग्रास दुलहन को देते हैं और मुख देखकर भूषण रुपया देते हैं जो सब दूलह की माता लेलेती है फिर दुलहन सब के पांव छूती है और कुछ रुपया भी देती जाती है फिर दोनों का स्नान करा वस्त्र भूषण से अलंकृत कर उसी माफिक कङ्कण खिलावाती है, यहां की स्त्रियां चाहती हैं कि दुलहन सर्वदा स्वामी के आधीन रहे इसलिये हर काम में दुलह को जिताती हैं, यहां दुलहन के हर काम का इम्तहान होता है, पहिले कड़ाही छुवाती फिर खीर करवातीं फिर चांवल रोटी, जो कन्या छोटी हो तो सब चीजों को हाथ से ही छूदेती है फिर जो जो इस का पकाया खाना खाता है कुछ दस्तूर के बमूजिब दुलहन को देता है, फिर दूसरे दिन सब स्त्रियां दोनों को माता या सीतला पै यथा ठिकाने लेजातीं हैं, यहां माली छिवों की शाखों की छड़ी बनाकर लाता है, एक दूलह के एक दुलहन के हाथ में देते हैं, इन छड़ियों से आपस में एक दूसरे को खूब मारता है, फिर दुलहन सास सुसरादि सब बांधवों के छड़ी छुआती है, इस का भी कुछ दस्तूर दुलहन को दिया

जाता है, फिर रात्रि के समय दोनों से प्रोहित जो कुछ पूजा होम कर दान कराते हैं, बाद इस के सब स्त्रियें गीत गाकर दोनों को कुल देव के स्थान में लेजाती हैं दुलह की भावज नेग लेकर पलंग बिछाती, और दोनों को पलंग पर बिठा देती है फिर चार नारियल चारों पावों से दुलहा तोड़ता है, यहां मिठाई पान सब स्त्रियों को दिये जाते हैं, फिर सब स्त्रियें बाहर निकल आती हैं और दोनों को वहीं बंद कर देती हैं फिर थोड़ी देर बाद गीत गाकर खोल देतीं हैं, दुलहन सास और सब के पांव छूती है।

फिर कन्या की माता सब बांधव स्त्रियों को साथ लेकर दुलहा की माता से मिलने आती है, दुलहा दुलहन को बस्त्र, फूलों गोटे रंगीन सूत के हार और बहुत मेवा मिठाई की परातें गीत गाती हुई जब द्वार पर आती हैं देती हैं तब उसी तरह स्त्री दरवाजे के कोनों में तेल डाल देती है, फिर एक बड़े मकान में दोनों ओरकी स्त्रियां बैठ जाती हैं बीच में दुलहा दुलहन को चौकियों पर बिठा देती हैं फिर नायन उठकर सब के सिरों पर रोलीमल देती है इसे भी दोनों ओर से नेग दिया जाता है फिर उसी समय दो बस्त्र लाल रंग में रंगे जाते हैं जिन्हें गीले ही दोनों समधनें ओढ़ती हैं और एक दूसरेके गले में मेवा फूलोंके हार पिन्हाती गोद में मिठाई देती हैं फिर दोनों मिलती हैं इस समय दोनों ओर की स्त्रियां बतौर बहस के गालियां देती हैं फिर कन्या की माता समधन के पांव छूकर पांचसौ से पचीस रुपये तक देती है तब इस ओर की स्त्रियें उन सब पर रंग फूलों मेवा के हार डाल कर बगलगीर होती हैं और यथाशक्ति देती जाती हैं फिर दोनों ओर से गुलाब छिड़का जाता है सब को पान दिये जाते हैं फिर जिस समय कन्या की माता वर कन्या को साथ लेकर चलती है तब दोनों ओर से सर से वारवार कर नायन को देते हैं फिर प्रोहतानीको दिया जाता है तब दुलहाकी माता कन्या की माता का कपड़ा पकड़लेती है और अपने सब कुटम्बी को गिनकर जितनी तोफीक हो लेती है फी आदमी चार रुपया दोरुपया एक रुपया आठ आना चार आना, बहुत लोग घरके जानवरोंको भी गिन लेते हैं कुत्ता, गाय, भैंस, घोड़ा, तोता मैना सब का लेती हैं फिर दुलहा दुलहन सहित सब चली जाती हैं, दूसरे दिन वर की माता उसी प्रकार का सामान साथ लेकर सब स्त्रियों सहित गीत गाती हुई कन्यावालों के घर जाती है तब भी दोनों ओर बैठतीं बीच

में बर कन्या दोनों को बिठा लेती उसी प्रकार नायन सब के सिर पर तेल मलती है फिर दोनों समधन रंगीन वस्त्र पहन आपस में मिलती और मेवा फूलों के हार एक दूसरी के गले में पहनाती है फिर सब ताली बजा गालियां गाती हैं यहां और कोई नहीं मिलती फिर कन्या की गोद में मेवा मिठाई पान देती हैं सबके ऊपर उसी प्रकार रंग गुलाब छिड़का जाता है तब कन्या की माता समधनादि सब को यथाशक्ति वस्त्र देती है रुपया यहां सवासौ से चार तक दिये जाते हैं फिर इन सब को खाना खिलाया जाता है और बहुत भोजन की चीजें साथ भी दीजाती हैं तब ये दुलहा दुलहन को साथ लेजाती हैं फिर दोनों ओर विवाहकी सब चीजें बिरादरी में बांटी जाती हैं।

यहां दुलहा को भी किसी बात में बोलने का अखतियार नहीं है माता पिता जो चाहें करें सब विवाह का असबाब छीन लेते हैं कन्या का भूषण भी उतार लेते हैं, और हर वक्त दुलहन के माता पिता भ्राता को गालियां देती हैं विवाह की चीज चाहे कितनी ही हो कभी पसंद नहीं आती हर वक्त नाक चढ़ा कर कहती हैं क्या भड़वोंने दिया फलानी चीज तो दोही नहीं अच्छी नहीं लड़की को कुछ शिक्षा नहीं दी, इस प्रकार के बहुत ताने देदेकर कन्या का और भी जी खट्टा करदेती है।

फिर शादी उस उमर में करना पसंद करती हैं जब न बर कन्याको जानता हो न कन्या बर को, एक तो पंडित जी का हुकुम है बड़ी उमर में विवाह करनेसे पाप होता है, दूसरा भुढ़िया पुरान में लिखा है जो सुख माता पिताको छोटे पुत्र के विवाह में मिलता है सो बड़े हुए कभी ख्वाब में भी नजर नहीं आता दूसरी यह बात लिखी है कि जब छोटी बहू छोटा बेटा विवाह कर लाता है तो उस के देहली पर पांव रखते ही सात कुलें खुश होकर सुरग को चली जाती हैं, छोटी बहू पुत्र बहिन भाई की तरह खेलते हैं, माता पिता देख देख कर बदन में फूले नहीं समाते, पुत्र से कहते हैं कि बहू के सिर में जूती मार, जब मारता है कन्या रोती है तब हंसते हैं या वह उलट कर मारती है तब खुद उसे मारकर कहते हैं कि तेरे माता तेरे पिताको मारती होगी, इस समय से दुलहा के दिल में उसकी ओरसे हिकारत पैदा होजाती है जो तमाम उमर दोनों की खराबी का बायस बनती है, कन्या यही दिक होना देख यहां रहना पसंद नहीं करती हर समय माता पिता के घर में

खुस रहती है, जब दोनों को होश आता है तो सास बहू को पुत्र के नज़दीक नहीं जाने देती यहां फिर क्या है एक दिन गैर हाजिरी हो दूसरे दिन दूसरी शादी का बंदोबस्त करलेते हैं या कोई और तजवीज़ होजाती है बहुधा माता भी बहू से नाराज़ हो पुत्र का दूसरा विवाह करादेती है, फिर इन को इधर से जी जलाना पड़ता है, और इनका दूसरा बंदोबस्त हो नहीं सकता लाचार हो तब अपनी रिहाई को आप कोई तजवीज़ करती है, फिर तो एक दूसरे का जानी दुश्मन होजाता है, यह बात एक किसी खास की नहीं है तमाम हिन्दुस्तान में यही हाल है, और यह सब खराबी जबरदस्ती के विवाह से पैदा होती है अगर एक दूसरे को पसंदकर अपनी खुशी जाहर करें कभी खराबी न हो।

देखो पाठक गण जब तुम किसी अन्यदेश में किसी से पहचान करना चाहो तो पहिले पत्र द्वारा करते हो फिर जब आपस में मुलाकात होती है तब थोड़ीसी प्रीति होजाती है जब कुछ दिन पास रहते हैं एक दूसरेके ख़याल कलाम मिज़ाज चालचलन अपने मानिंद देखते हैं तब दोनों मित्र बनजाते हैं, कैसा शोक करने का समय है कि जिस चीज़को जड़ ही प्रीतिमें जमती है और इसी के भरोसे से एक दूसरेको अपना आप तमाम उमर के लिये देदेता है, हाय शोक बग़ैर जाने पहचाने पशु के समान देदी जाय! एक दूसरे की सूरत सेभी आशना न हो! क्या तुम लोग इन में प्रीति होनेकी उम्मीद देखते हो! हरगिज़ नहीं, दैव योग से प्रीति होजाती हो, तो हो वरना कोई सूरत नहीं नज़र आती।

अब सोचो पाठक गण यह जबरदस्तीका विवाह नहीं है तो क्या है? बेगुनाहों का जेलखाना है!

प्रीति के ही भरोसे स्त्रियें जीते जी मरे हुए पति के संग जलती अग्नि में प्रवेश करती हैं, प्रीतिसे ही महात्मा लोग सिद्धियोंको प्राप्त करते हैं प्रीतिसे ही परमेश्वर खुश होता है प्रीति से ही माता अनेक तरह के दुख उठा पुत्र को पालती है प्रीति ही में बांधव बांधव की सहायता करता है प्रीति से ही पशु आदमीके वश होजाते हैं प्रीतिसे ही पक्षी संतानको पालते हैं प्रीतिसे ही स्त्री पुरुष के साथ जलजाती है प्रीति से ही पुत्र वृद्ध माता पिता की सेवा करते हैं प्रीति से ही पिता पुत्र को शुभ गुणादि विद्या ग्रहण कराता है प्रीति से ही

गृहस्त को सुख मिलता है प्रीति से ही दुनिया के काम व्योपारादि एक दूसरे की सहायता से करते हैं प्रीति से ही जीव त्याग और देह का संबंध है, गरज कि दुनिया की बुन्याद ही प्रीति पर है, जहां यह नहीं वहां किञ्चित मात्र भी सुख नहीं, जहां प्रीति नहीं वहां राति दिन कलह एक दूसरे का जानी दुश्मन विभचारादि अनेक मंदकर्म विष का देना युद्ध होना आत्मघात कई तरह के पाप रात दिन कलह विरोध संतान का अभाव कई तरह की खराबियां होती हैं, देखो मनुस्मृति में तृतीयाध्याय में कहा है—

पूजा बिना पाय स्त्री जिस कुलको शाप देतीहै ।
वह कुल चारों ओर से नष्ट हो जाता है ॥

इन के शाप से कुल तो क्या मुल्क ही नष्ट को प्राप्त हुआ जाता है, फिर कहा है जब स्त्री प्रसन्न नहीं रहती तो पति भी प्रसंन नहीं रहता, और जब पति प्रसंन नहीं रहता तो संपत भी नहीं होती, इस जबरदस्ती के विवाह में तो कोई सूरत ही नहीं जिसमें स्त्री एक दिन को भी प्रसंन हो, शायद सौ में एक का इतिफाक होगा, फिर हिन्दुस्तान को संपत कैसे प्राप्त हो, फिर लिखा है स्त्री के ही प्रसंन रहने से कुल प्रसंन रहता है, स्त्री के अप्रसंन से कुल भी अप्रसंन रहता है, ब्राह्मणों को चाहिये वा सब हिन्दुओंको चाहिये कि महात्मा मनु के वाक्य को याद कर कन्या की प्रसंनता पूर्वक विवाह किया करें तब कुल तो क्या तमाम हिन्दुस्तान को प्रसंनता प्राप्त होगी ।

अकसर स्त्रियें बड़ी उमर में जब स्वामी के घर उस से दुख पाती हैं तो कहाकरती हैं कि अगर हमारी शादी इस उमर में होती तो हम कभी इस दुष्ट के घर विवाह न कराती, हमारे कमबख्त माता पिताने लालची प्रोहितों के कहने से तमाम उमर के लिये हमें अंध कूप में आखों से देखते हुए ही ढकेल दिया, खुद इस कदर तकलीफें उठाती हैं माता पिता को गालियां देती हैं अपनी ज़बान से इकारार करती हैं प्रोहित नाई को अनेक शाप देती हैं ।

अफ़सोस है इन की अकल पर ! कि अपनी प्यारी बेटियों को जहां प्रेतजी हुकम देते हैं फ़ौरन आंखें मीचकर देदेते हैं, जब कन्या दुखित हो पितादि प्रोहितोंको शाप देती है तब प्रालब्ध पर इलज़ाम लगाती हैं कहती हैं किकिसी का क्या दोष है इस की प्रालब्ध में ही विधाताने ऐसा बर लिखदिया था ।

ऐसे लोगोंसे पूछना चाहिये कि जब तुम कन्या की शादी करते हो तो क्या

विधाता तुम्हें परवाना भेज देता है कि मैंने तुम्हारी कन्या के वास्ते यही वर रचा है ?

यह तो वही मसल हुई कि आंखों से देखकर जलती हुई आग में कूद पड़ना और कहना कि अगर हमारी प्रालब्ध में बचजाना होगा तो बच रहेंगे और जब जलजायें तो कहें कि हमारी प्रालब्ध में जलकर मरना लिखा था ये सब बातें मूर्ख और सुस्त आदमियों की हैं खुद कुछ उद्यम करना नहीं जानते पड़े २ प्रालब्ध को रोया करते हैं, जब काम बिगड़ जाता है, तब प्रालब्ध पर दोष लगा अपना दिल ठंडा करलेते हैं।

चाहिये जिस काम में पीछे पछताना पड़े पहिले उसे सोचके करें, किसी विद्वान की संमति ले वा कन्या की सम्मति ले बांधवों से पूछें, अगर को किसी संमति न लें तो आप अच्छी तरह घर तलाश करलें, इन मूर्ख प्रेतों के कहने पर हरगिज़ विवाह न करना चाहिये।

अब अखीर में मैं अपनी हिम्मती बहिनों से हाथ जोड़ कर अरज़ करती हूं कि आप अपनी बेटियों से अपना बदला न उतारें अपने जैसी मुसीबत उन पर न डालें खुशी के वक़्त इन के लिये दुख का समान न करें इन बेगुनाह-ओं को बे वक़्त शोक के जेलखाने में न फंसाय इन की तमाम उमर खराब कर मुरव्वत की जगह दुशमनी का काम न करें, इन बग़ैर ज़बान की गौवों के हर काम को दिलो जान से अच्छी तरह करना चाहिये क्योंकि गाय तो कस्साब के घर जाकर बहुत चिल्लाती रोती है, भागजाती है जब कस्साब को देखती खड़ी नहीं होती, मगर इनको बेजान की मानिंद जिस तरह चाहो हलाल करो जिसके पास चाहो बेचडालो जहां चाहो भेज दो जो चाहो करा लो मेरे नज़दीक उन गौवों से यह ज्यादा रहम करने के लायक है।

अब पाठक गणों से यही प्रार्थना है कि अगर आप बदरस्मों के तोड़ने का इरादा करते हों तो पहिले स्त्रियों को विद्या ग्रहण कराओ बगैर विद्या के कभी इरादा पूरा न होगा आप बद रस्मों के तोड़ने में चाहे कितनी ही कोशिश करें सब बेफायदा होंगी जब तक रस्म ये खुद समझकर न त्यागेंगी चाहे गवर्नमेंट भी इनके दूर करनेको नया कोरट बनावे सब लाहासिल है॥

Arya Darpan Press, Shahjahanpur.